16

मसाढ़ का मौर्यकालीन सिंह मुख : एक पुनर्मूल्यांकन

नीरज कुमार पाण्डेय

मसाढ़ बिहार में आरा नगर से छः मील दक्षिण पश्चिम में स्थित है। सर्वप्रथम बुकॉनन[1] ने इस स्थान के बारे में विस्तृत विवरण दिया है। बुकॉनन के पश्चात् 1871-72 में कनिंघम[2] ने इस क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। 1918-19 में एच. पाण्डेय के मसाढ के सर्वेक्षण क्रम में भगवती मन्दिर से मौर्यकालीन चमक (पालिश) युक्त सिंह-शीर्ष का एक टुकड़ा (चित्र सं0 1,2,3) प्राप्त हुआ।[3] वर्तमान में यह पटना संग्रहालय के मूर्ति वीथिका में प्रदर्शित है।[4] डॉ.विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह के अनुसार इस सिंह-शीर्ष के साथ एक टूटा चबूतरा (abacus) भी था जिस पर युनानी पौधे (acanthus) की पत्तियाँ उभरी हुई उकेरित थी।[5]

प्रस्तुत सिंह-मुख (संग्रहालय संख्या 2771) की लम्बाई 29 से.मी. और चौड़ाई 24 से.मी. है। सिंह के अयाल घुंघराले लच्छों से बने हैं, कान टूटा हुआ है एवं आंखों एवं मूछों की बनावट अप्राकृतिक और विचित्र होते हुए भी महत्त्वपूर्ण हैं। उल्लेखनीय है कि सिंह के मुख के दांत सिंह के न होकर मनुष्यों के समान बने हैं। विद्वानों में इस सिंह-मुख की ठीक-ठीक पहचान को लेकर मतभेद है। एस. पी. गुप्ता इसे ईरानी प्रभाव से युक्त किसी भवन के जल प्रणाल का हिस्सा मानते हैं।[6] विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह का कथन है "यद्यपि यह निश्चित है कि यह मूर्त्ति मौर्यकालिक है, तथापि शैली की दृष्टि से अनुमान होता है कि यहाँ कोई नौसिखुआ कलाकार किसी निश्चित शैली तथा निश्चयात्मक आदर्श की नकल कर रहा हो।"[7] चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा इस सिंह को अशोक द्वारा बनवाया गया प्रस्तर स्तंभों की श्रृंखला में प्रारंभिक अथवा पूर्वकालिक मानते हैं। उनका कहना है कि शिल्पकार ने इस सिंह के साथ पूरा न्याय नहीं किया है। सिंह के मुख को देखकर ऐसा लगता है कि उसके जबड़े में मनुष्य के दाँत बैठा दिये गये हो।[8] लेखक को यह कारण उचित नहीं प्रतीत होता। अशोक जैसे चक्रवर्ती सम्राट् ने अपने स्तम्भों एवं उसके शीर्ष के निर्माण में निश्चित ही दक्ष कलाकारों को ही नियुक्त किया होगा। प्रतीत होता है कि मसाढ़ सिंह-शीर्ष को विशेष प्रकार का बनवाने में उसका कोई निश्चित उद्देश्य था। इस मूर्त्ति की ठीक-ठीक पहचान के लिए बौद्ध साहित्य में कुछ रोचक सामग्री मिलती है सम्भवतः यही सामग्री अशोक की प्रेरणा स्रोत रही हो। प्रस्तुत लेख में इसी परिप्रेक्ष्य में सिंह-शीर्ष को पहचानने का प्रयास किया गया है।

सुत्तनिपात[9] तथा अंगुत्तर निकाय में आलवी नगर के बाहर आलवक नाम के एक यक्ष के रहने का सन्दर्भ है जो मानव मांस खाता था। आलवी नगर निवासी उसके उत्पात से भयभीत थे। आलवी के राजा द्वारा यह आश्वासन देने पर कि उसे प्रतिदिन एक मनुष्य तथा पात्र में अन्न भोजन के रूप में प्रतिदिन मिलता रहेगा, उसने नगर में उत्पात मचाना छोड़ दिया। राजा ने अपने मंत्री के परामर्शानुसार अपराधियों को यक्ष के भोजन स्वरूप भेजना प्रारम्भ किया। अपराधियों के समाप्त हो जाने पर नगर के निवासियों को यक्ष के भोजनार्थ भेजा जाने लगा। इससे भयभीत होकर लोग नगर छोड़ कर भागने लगे। बारह वर्षों की अविध बीतने पर नगर में कोई

मनुष्य शेष नहीं रहा। अतएव राजा अपने बेटे राजकुमार को आलवक यक्ष के पास भेजने को प्रस्तुत हुआ, इसी समय बुद्ध का आगमन हुआ, जो उस समय आलवी में अपना 16वां वर्षावास कर रहे थे। सारे घटनाक्रम को जानने के पश्चात् बुद्ध स्वयं आलवक यक्ष के पास गये और उसे अपने प्रभाव से विनीत कर बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। फलतः यक्ष अपना मूल हिंसक स्वभाव छोड़कर एक अहिंसक मानव बन गया।

आलवी श्रावस्ती से 30 योजन और बनारस से 12 योजन की दूरी पर स्थित था। चुलवग्ग से ज्ञात होता है कि श्रावस्ती से बुद्ध चारिका करते हुए कीटागिरि गये। कीटागिरि काशी जनपद में था। कीटागिरि से बुद्ध आलवी पहुँचे, तत्पश्चात् वहाँ से राजगृह गये। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान आरा ही आलवी नगर रहा होगा क्योंकि गाजीपुर से बलिया होते हुए गंगा नदी को पार करने के बाद आरा (बिहार) पहुँचा जा सकता है।

आलवी की वर्तमान पहचान तथा मसाढ़ की खोज पर ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत से बहुत सहायता मिलती है।[10] वाराणसी से वैशाली जाने के क्रम में ह्वेनसांग गाजीपुर होते हुए अविद्धकर्ण (बलिया) पहुँचता है। तत्पश्चात् गंगा नदी को पार कर मसाढ़ (महाशाल) के नारायण मंदिर से 30 ली पूरब जाने पर उसे अशोक द्वारा निर्मित जमीन में आधा धँसा हुआ स्तूप मिलता है। उस स्तूप के सम्मुख सिंह शीर्ष युक्त एक शैल स्तम्भ था, जो जमीन से 20 फीट ऊँचा था।[11] इस स्तंभ पर अशोक द्वारा लिखवाया गया एक अभिलेख था, जिसमें बुद्ध द्वारा आलवी में मनुष्य का माँस खाने वाले तथा रक्त पीने वाले यक्ष को विनीत तथा बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का उल्लेख था। बुद्ध द्वारा दीक्षा प्राप्त कर यक्ष ने मानव मांस खाना छोड़ दिया।[12]

बौद्ध धर्म को चिरस्थायी बनाने में स्थविर उपगुप्त से प्रभावित सम्राट अशोक का बहुत बड़ा योगदान है। सम्राट अशोक बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित था। वह बुद्ध के जीवन से सम्बद्ध स्थानों को महिमामण्डित करना चाहता था।[13] उपगुप्त की सहमति के पश्चात् अशोक ने उनके निर्देशन में पूरे जम्बूद्वीप में 84000 स्तूपों की स्थापना की। बुद्ध के जीवन से संबंधित अति महत्वपूर्ण स्थानों पर स्तूप के साथ-साथ अशोक ने शिला स्तम्भ भी स्थापित किये और उन पर लेख उत्कीर्ण करवाये।

प्रतीत होता है कि स्थान विशेष के महत्व को स्थापित करने के लिए अशोक ने इस विशेष प्रकार के सिंह-मुख को एक स्तंभ पर शीर्ष रूप में प्रतिष्ठित किया होगा, जिसे ह्वेनसांग ने देखा था। विचारधीन सिंह-मुख के आकार के आधार पर पूरे सिंह की परिकल्पना की जाय तो उसका स्तंभ शीर्ष के रूप में उपयोग असंभव नहीं लगता।

ऐसा लगता है कि अशोक ने इस विशेष प्रकार के सिंह-मुख के निर्माण में एक हिंसक यक्ष (आलवक) का अहिंसक मानव के रूप में परिवर्तित होने की घटना को ध्वनित किया है। सिंह का मुख तो हिंसक प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है, पर उसके दांत स्वाभाविक रूप से मांस भक्षणोचित न दिखलाकर मानव दांतों में परिवर्तित कर मानवोचित अहिंसक प्रवृत्ति को परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :

1. D.R. Patil, The Antiquarian Remains in Bihar, K.P. Jayawal Research Institute, Patna, 1963, pp.271-274.
2. उपरोक्त, पृ. 271-274।
3. Sir John Marshal, Annual Report 1918-1919, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 2002, p.16.

4. Naseem Akhter, Patna Museum Catalogue- Stone Sculptures & Other antiquities, Patna Museum, Patna, 2001, p.10.

5. बिन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, भारतीय कला को बिहार की देन, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1958, पृ.61।

6. Dr. S.P. Gupta, The roots of Indian Art, B.R. Publishing Corporation, Delhi, 1980, pp.82, 84, 92, 122, 283.

7. बिन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, भारतीय कला को बिहार की देन, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1958, पृ.61।

8. Chitta Ranjan Parasad Sinha, Early Sculpture of Bihar, Indological Book Corporation, Patna, 1980, pp. 20-21.

9. G.P. Malalasekera, Dictionary of Pälé Proper Names, Munshiram Manoharlal Publication Pvt. Ltd., New Delhi, Vol.I, 1983, pp.291-93, 297.

10. Thomas Walters, On Yuan Chwang's Travels in India (AD.629-645), Munshiram Manoharlal, New Delhi, 2012, Vol.II, p.61

11. जगमोहन वर्मा, सुयेनच्वांग की भारत यात्रा, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, 2007, पृ.108।

12. Samuel Beal, Buddhist Records of the Werton World, Asian Educational Services, New Delhi, 2003, Vol.II, p.64.

पी.एल.वैद्य, दिव्यावदान, कुणालावदान, मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिट्युट, दरभंगा, 1959, पृ. 246-254।

चित्र सं0 1

चित्र सं0 2

चित्र सं0 3